मुग़लों की दुश्मनी कभी राजपूतों से नहीं थी

मुग़ल बादशाहों से तो तमाम राजपूत राजों ने अपनी बेटियाँ ब्याहीं और मुग़लों को दामाद बनाया। राजपूत राजे मुग़लों के ससुर और साले बने,राजपूताने में तो मुग़लों का ननिहाल था। मुग़लों ने राजपूतों को अपनी हुक़ूमत में बड़े पद दिए।यूपी के मैदानों में आबाद तमाम राजपूत घराने मुग़ल काल में ही राजस्थान से यहाँ आकर तब बसे जब मुग़ल बादशाहों ने उन्हें जागीरें सौंपीं। ये राजपूत जागीरगार मुग़ल सल्तनत की मज़बूत कड़ी थे।

मुग़लों ने राजपूतों से हिंदोस्तान की सत्ता छीनी ही नहीं तो राजपूत मुग़लों के दुश्मन क्यों होते। हिंदोस्तान की सत्ता राजपूतों की थी ही नहीं जब मुग़ल आए। राजपूत तो वर्तमान के राजस्थान के छोटे छोटे रजवाड़ों में बसे थे जो एक दूसरे से लड़ते रहते,अपने छोटे राज्य को ही अपना देश समझते।

मुग़लों की दुश्मनी तो पठानों से थी। पठानों से मुग़लों ने सत्ता छीनी। लोदी सुल्तान पठान ही तो था,उसके पहले तमाम पठान सुल्तान रहे। खिलजी भी पठान थे,ग़ोरी भी पठान थे। हिंदोस्तान तब ऐसा नहीं था जैसा आज का क्षेत्रफल है।वर्तमान अफ़ग़ानिस्तान का हिस्सा तो हिंदोस्तान का प्रवेश द्वार था, हिंदोस्तान में था,श्वेत भारत कहा जाता। अशोक के काल में भी वो हिस्सा हिंदोस्तान का हिस्सा था,उसे तो अंग्रेज़ों ने हिंदोस्तान से अलग किया है। इतिहास से हटकर महाकाव्यों की बात करें,महाभारत काल की बात भी इसमें शामिल है,तो अफ़ग़ानिस्तान का गंधार हिंदोस्तान का बहुत मशहूर हिस्सा था।बुद्ध के दौर में भी ये हिस्सा हिंदोस्तान था,आर्य जब आए तो पहले हिंदोस्तान के उसी हिस्से में आए।

ऐसे में जैसे राजस्थान हिंद का हिस्सा था वैसे ही अफ़ग़ानिस्तान हिंद का हिस्सा था।ये ग़ोरी खिलजी वग़ैरह कोई विदेशी नहीं थे। जैसे पटना और सारनाथ और कन्नौज हिंद में थे वैसे ही काबुल कंधार ग़ोर ख़ल्ज समेत वो तमाम इलाक़े भी हिंद में थे जहाँ के ग़ोरी और खिलजी थे,लोदी थे। दिल्ली हिंदोस्तान की सल्तनत का मुख्य शहर था,वहाँ राजपूत भी क़ाबिज़ होना चाहते और पठान भी क़ाबिज़ होना चाहते,राजपूत और पठान दोनों एक देश के थे,राजधानी पर क़ब्ज़ा चाहते थे।राजपूतों को हराकर पठानों ने क़ब्ज़ा कर लिया।अब भले देश अलग हो,तब कहाँ देश अलग था कि ग़ोरी विदेशी हमलावर हो गया।ये सब देशी थे।हिंदोस्तान के बाहर के तो मुग़ल थे,बाबर बाहरी था लेकिन अकबर और अकबर के बाद सब मुग़ल हिंदोस्तानी ही थे,यहीं पैदा हुए,यहीं मरे,बाबर भी लुटेरा नहीं था,यहीं बस गया,यहीं मरा,कुछ लूटकर कहीं नहीं ले गया।फ़रग़ना से बाबर आया,फ़रग़ना हिंदोस्तान का हिस्सा नहीं था। तब राजपूतों ने चाहा कि विदेशी हमलावर बाबर की मदद से अपने देश के पठानों से दिल्ली की हुक़ूमत ले लेंगे और राज करेंगे। जबकि हो गया उल्टा,राजपूतों ने बाबर की मदद की और बाबर फिर यहाँ से गया ही नहीं।वही हुक़ूमत करने लगा।बाबर के मरने के बाद शेरशाह सूरी के सूरी क़बीले के पठानों ने फिर देश पर क़ब्ज़ा हासिल किया। शेरशाह सूरी मरा तो मुग़लों की मदद राजपूतों ने की और फिर पठान सल्तनत की समाप्ति हुई। मुग़ल फिर आ गए।बादशाह अकबर पठानों से ही होशियार रहता और पठानों का दमन उसने किया।वो पठानों का दुश्मन था और राजपूतों का दामाद था। राणा प्रताप की सेना की तरफ़ से सूरी क़बीले का पठान ही सेनानायक के तौर पर मुग़लों से लड़ रहा था।

इसलिए सबको ध्यान रखना चाहिए कि सिर्फ़ यूपी बिहार ही हिंदोस्तान नहीं था जहाँ आर्य क़बीले मूल निवासियों को हराकर बसे। बल्कि वर्तमान अफ़ग़ानिस्तान भी हिंदोस्तान था और जितने भी क़बीलों ने मुग़लों से पहले सल्तनत काल में दिल्ली पर क़ब्ज़ा किया सब हिंदोस्तानी थे। विदेशी आक्रमणकारी खिलजी और ग़ोरी नहीं थे। जब उनका इलाक़ा हिंदोस्तान का हिस्सा था तो वो विदेशी कैसे हो गए।वो तो हिंदोस्तानी ही थे जिनसे राजपूत राजे दिल्ली नहीं ले पाए।इसलिए विदेशी हमलावर बाबर की मदद से अपने ही देशभाईयों से दिल्ली छीनना चाहते थे जिसमें असफल हुए। इतिहास गोबर का छोत नहीं है कि उपला बनाकर जला दिया जाए। इतिहास बीता कल है जो बीत गया और समकालीनों द्वारा लिख दिया गया है,जो इतिहास में लिख गया हो उस इतिहास में संशोधन नहीं हो सकता।ये नहीं कि जबरन इतिहास में हेरफेर कर या नचनियों भंड़ैतों के काल्पनिक नाटक से किसी को बहादुर साबित कर लिया जाएगा,ऐसी अंधी नहीं लगी है। कौन कितना बहादुर था और किसके गट्टे में कितना दम था सब इतिहास में है जो बदला नहीं जा सकता,क्योंकि हिंद का इतिहास पूरी दुनिया में है।इसलिए वर्तमान और आने वाला कल संवारने की सबको चिंता करनी चाहिए।इतिहास में किसका कितना वज़न था ये इतिहास बताता है।

किसी फिल्म के द्वारा इतिहास में छेड़छाड़ कर इतिहास में जबरन वीर बनना संभव नहीं है। फिल्म काल्पनिक है, ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित नहीं है,ऐसा फ़िल्म में लिखा जाता है,पर्दे पर आता है,लेकिन कम ही लोग उसके ऊपर ध्यान देते हैं,अनपढ़ भी फिल्म देखते हैं,कम अक्ल के लोग भी फिल्म देखते हैं,वो फ़िल्म को सच समझ लेते हैं,उसे ही इतिहास मान बैठते हैं,कुछ लोग ऐसी फिल्मों से राजनीतिक हित साधने लगते हैं। सम्राट पृथ्वीराज जैसी फ़िल्में इतिहास से हटकर कोरी गप्प परोस रही हैं,झूठा इतिहास दिखा रही हैं। काल्पनिक के नाम पर ऐतिहासिक तथ्यों से छेड़छाड़ करने की छूट नहीं होनी चाहिए। अभी देश में अनपढ़ बहुत हैं,समाज इतनी प्रगति नहीं कर गया कि काल्पनिक और ऐतिहासिक के भेद को समझ सके,लेकिन ऐसी फ़िल्में जो मर्म परोसने का प्रयास करती हैं उसे समझ जाता है।

– डॉ. शारिक़ अहमद ख़ान

प्रधानमंत्री मोदी के सपने जो गौतम अडाणी ही पूरे कर सकता है

हेमंत कुमार झा

इधर मोदी ने सपना देखा कि हर किसान के पास ड्रोन हो, उधर खबर आई कि गौतम अडाणी ने ड्रोन निर्माण के क्षेत्र में कदम रख दिया है।

यह भी संभव है कि अडाणी ने पहले ड्रोन निर्माण के क्षेत्र में कदम बढ़ाने का फैसला लिया हो और उसके बाद प्रधानमंत्री ने यह सपना देखा हो।

जो भी हो, इस अद्भुत संयोग पर अंग्रेजी की एक कहावत याद आती है, "ग्रेट माइंड्स थिंक एलाइक"।

यानी... महापुरुष एक जैसे सोचते हैं।

आधुनिक कृषि में ड्रोन की उपयोगिता फसलों की निगरानी और कई तरह के नुकसान से बचाने में है। ड्रोन बनाने वाली बेंगलुरु की एक कंपनी जेनरल एयरोनॉटिक्स में अडाणी ने 50 प्रतिशत की हिस्सेदारी खरीदने की डील की है।

कृषि के अलावा डिफेंस सहित कई अन्य क्षेत्रों में ड्रोन का उपयोग बढ़ता ही जा रहा है तो इसके निर्माण में पूंजी लगाना भविष्य में अकूत लाभ की गारंटी है।

ऊपर से, अगर प्रधानमंत्री के सपनों का साथ हो तो फिर कहना ही क्या है। केंद्र सरकार देश में ड्रोन सेक्टर के विकास पर खासा जोर दे रही है और इसके लिये एक ड्रोन नीति भी तैयार की गई है।

अडाणी की योजनाओं और प्रधानमंत्री के सपनों का मेल वाकई अद्भुत है।

प्रधानमंत्री ने आयुष्मान भारत का सपना देखा, सरकारी खर्च पर 50 करोड़ लोगों के स्वास्थ्य बीमा की घोषणा की, इधर कोरोना संकट के बाद मध्य आय वर्ग के लोगों में भी स्वास्थ्य बीमा करवाने की होड़ लगी, उधर अडाणी ने हेल्थकेयर के क्षेत्र में भी बढ़े निवेश का फैसला ले लिया। इसी 17 मई को 'अडाणी हेल्थ वेंचर्स लिमिटेड' नामक कंपनी की स्थापना हुई है।

भारत में चिकित्सा के क्षेत्र में निजी क्षेत्र के लिये अथाह अवसर हैं और सरकार की मंशा भी है कि लोग खांसी जुकाम होने पर भी निजी अस्पतालों की ओर ही रुख करें तो बेहतर है। अब, इस अवसर का लाभ अडाणी भी उठाना चाहें तो किसी को क्या दिक्कत?

एक सरकारी फार्मा कंपनी एच एल एल हेल्थकेयर को सरकार बेचने वाली है और जाहिर है, प्रधानमंत्री के सपनों के सहयात्री अडाणी इस कंपनी को खरीदने की होड़ में भी आगे हैं।

प्रधानमंत्री का सपना है कि भारतीय रेल की आधारभूत संरचना विश्वस्तरीय हो, देश के महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशनों की चमक-दमक से लोगों की आंखें चौंधिया जाएं। अडाणी इस सपने को मुकाम तक पहुंचाने में जुट गए। उन्होंने अपनी गाड़ी कमाई के पैसों को रेलवे प्लेटफार्म्स आदि खरीदने में झोंक दिया। आगे और झोंकेंगे।

प्रधानमंत्री का सपना है कि देश के बड़े बंदरगाह और हवाई अड्डे आधुनिक तकनीकों और सुविधाओं से लैस हों। उनके सपनों को पूरा करने के लिये अडाणी एक एक करके न जाने कितने बंदरगाह और एयरपोर्ट खरीद चुके। इसमें कोई संदेह नहीं कि आगे और खरीदेंगे...खरीदते जाएंगे।

बीबीसी की रिपोर्ट बताती है कि नरेंद्र मोदी के सपनों और अडाणी के व्यावसायिक प्रयासों का साथ दो दशक पुराना है, जब 2002 में मोदी जी गुजरात के मुख्यमंत्री बने थे।

रिपोर्ट के मुताबिक 2002 में गौतम अडाणी की कुल संपत्ति 76 करोड़ डॉलर थी। 2014 में जब मोदी जी ने गुजरात छोड़ा तो इन 12 वर्षों में अडाणी की कुल सम्पत्ति एक हजार करोड़ डॉलर से अधिक हो चुकी थी। यानी उन 12 वर्षों में उनकी संपत्ति में 13 गुणा से भी अधिक इजाफा हुआ।

उन 12 वर्षों में मोदी जी गुजरात के लिये सपने देखा करते थे। फिर, 2014 में वे प्रधानमंत्री बन गए और तब देश के लिये सपने देखने लगे।

अब, मोदी जी के सपने बड़े थे तो अडाणी जी के दांव भी बड़े हुए।

बीबीसी की उसी रिपोर्ट में ब्लूमबर्ग बिलियेनर्स इंडेक्स के हवाले से बताया गया है कि फरवरी, 2022 में गौतम अडाणी की कुल संपत्ति 8850 करोड़ डॉलर हो गई थी। उस दिन वे मुकेश अंबानी को भी पछाड़ कर देश के सबसे अमीर बन गए थे।

यानी, 2014 से 2022 तक के 8 वर्षों के मोदी राज में अडाणी की कुल संपत्ति में 9 गुने की बढ़ोतरी हुई।

अब...जब मोदी जी के सपने बड़े थे तो उन सपनों के सहयात्री अडाणी जी के लाभ भी बढ़े ही होने थे।

आजकल अंबानी और अडाणी में होड़ लगी रहती है। किसी दिन वे देश के सबसे अमीर घोषित होते हैं तो किसी दिन ये घोषित होते हैं।

हालांकि, प्रधानमंत्री ने सपना तो यह भी देखा था कि 2022 तक किसानों की आमदनी भी कम से कम दोगुनी हो जाए। लेकिन, किसानों ने उनके सपनों के साथ घोर अन्याय किया। जहां अडाणी मोदी जी के 8 वर्षों के राज में नौ गुनी छलांग लगा गए, किसान तो महज सवा गुनी छलांग में ही हांफने लगे। उल्टे, कुछ दिलजले विश्लेषक तो बता रहे हैं कि भयानक मुद्रा स्फीति और बेलगाम महंगाई के कारण आम किसान पहले से और अधिक गरीब ही हो गए हैं।

उधर, नौजवानों की बेरोजगारी हालिया इतिहास के उच्चतम स्तरों पर पहुंच गई तो उनकी आमदनी की बात ही क्या करनी। जब आमदनी है ही नहीं तो उसमें बढ़ोतरी कैसी? अपने बाप की रोटी तोड़ते वर्षों से बैंक, एसएससी, रेलवे आदि की तैयारी करते वैकेंसी की ओर टकटकी लगाए रहते हैं और वैकेंसी है कि रेगिस्तान के बादलों की तरह छलती ही जा रही है।

मोदी जी का सपना था कि हर वर्ष नौजवानों को दो करोड़ नौकरियां देंगे। लेकिन, उनके सपनों को सरकारी विभागों और प्राइवेट सेक्टर ने मिल कर भारी धोखा दिया। सरकारी विभाग वैकेंसी निकालने की जगह पोस्ट ही खत्म करने में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। आज की ही खबर है कि रेलवे के बाबू लोग भरी दोपहरी की तपती धूप में मुर्दाबाद मुर्दाबाद करते पसीने से तरबतर हो रहे थे, क्योंकि रेलवे ने नॉन सेफ्टी संवर्ग के 72 हजार पदों को खत्म करने का निर्णय लिया है। जब पद ही खत्म तो वैकेंसी कैसी? जब वैकेंसी ही नहीं तो बहाली कैसी?

ये तो अच्छा है कि दिल्ली के कुतुब मीनार से लेकर काशी की मस्जिद तक की खुदाई के लिये नारे लगाने को नौजवानों की अच्छी खासी वैकेंसी आई है। उधर, मध्य प्रदेश से लेकर कर्नाटक तक में भी इसी टाइप की वैकेंसियों की बहार है।

जो नौजवान इतिहास की कब्रों को खोदने और खुदवाने में दिलचस्पी रखते हैं उन्हें प्रेरणा देने के लिये अक्षय कुमार की नई फिल्म पृथ्वीराज अगले सप्ताह आ ही रही है जिसके ट्रेलर के अंत में बड़े-बड़े शब्दों में लिखा दिखता है, धर्म के लिए जिया हूँ, धर्म के लिये मरूंगा।

भले ही इतिहास के प्रोफेसर और छात्र पृथ्वीराज के 'धर्म के लिये जीने और धर्म के लिये मरने' की बात सुन कर माथा पीट लें, व्हाट्सएप युनिवर्सिटी से इतिहास को जानने वाले नौजवानों के लिये तो यह प्रेरक बात हो ही सकती है।

वैसे, मोदी जी 2014 से ही सपना देख रहे हैं कि देश के नौजवान 'स्किल्ड' हों ताकि देश को 5 ट्रिलियन डॉलर वाली अर्थव्यवस्था बनाने में अपनी महती भूमिका निभा सकें। अब, इन नौजवानों को स्किल्ड बनाने के लिये बड़े ही ताम झाम से शुरू होने वाले 'कौशल विकास केंद्र' ही सफेद हाथी साबित होने लगे तो क्या किया जा सकता है।

बहरहाल, बड़े सपने देखने के लिये मोदी जी का अभिनंदन तो बनता ही है, और, उनसे भी अधिक, अडाणी-अंबानी का अभिनंदन बनता है जिन्होंने बताया कि दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि दर किसे कहते हैं। हमलोग तो बचपन से सिर्फ इस मुहावरे को सुनते ही आ रहे थे, इन कारपोरेट प्रभुओं ने इन मुहावरों को साक्षात चरितार्थ करके भी दिखा दिया। हमारी पीढ़ी धन्य है।